ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 341-343
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

ग्रामीण विकास में विद्युत योजनाओं की प्रभाविता का मूल्यांकन : सुल्तानपुर जनपद

अस्मिता मिश्रा
शोध अध्येत्री– भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-23.06.2022, Revised-26.06.2022, Accepted-30.06.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: – ग्रामीण विकास एक बहुआयामी संकल्पना है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण परिवेश के रुपान्तरण से है। इसमें सामाजिक–आर्थिक, राजनैतिक संस्थाओं एवं अवस्थापनात्मक तत्वों तथा उत्पादन प्रक्रिया एवं ग्रामीण जनसंख्या के गहरा समन्वय स्थापित करके ग्रामीण जनसंख्या के जीवन स्तर में मात्रात्मक एवं गुणात्मक परिवर्तन पाया जा सकता है।

ग्रामीण विकास को ग्रामीण क्षेत्रों की विकास योजना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके अन्तर्गत सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि, विद्युतीकरण, कृषि हेतु उन्नत तकनीकों इत्यादि पर विशेष ध्यान दिया जाता है। वस्तुतः ग्रामीण को किसी एक खण्ड के विकास के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि ग्रामीण विकास एक बहुखण्डीय संकल्पना है। Hunter, Guy and Reve Dermant (1968) के अनुसार वास्तव में ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए ग्रामीण विकास कार्यक्रमों को प्राथमिकता देना ही ग्रामीण विकास है, जिसके अन्तर्गत कृषि विकास, ग्रामीण गृह निर्माण, ग्रामीण स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार, सामाजिक–आर्थिक ढाँचे में परिवर्तन आदि बातें सम्मिलित है।

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण विकास, बहुआयामी संकल्पना, प्राथमिकता, ग्रामीण गृह निर्माण, ग्रामीण स्वच्छता, स्वास्थ्य, शिक्षा।

ग्रामीण विकास का अर्थ ऐसी व्यूह रचना से है जिसे एक विशेष समूह के लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के उत्थान के लिए डिजाइन किया गया है। गाँवों के छोटे किसान, शिल्पी, दस्तकार, भूमिहीन मजदूर और गरीब लोग इस समूह के अन्तर्गत आते हैं। भारत में ग्रामीण विकास का तात्पर्य ग्रामीण गरीबी का उपशमन, जातिवाद का उन्मूलन तथा सामाजिक–आर्थिक बुराईयों एवं कुरीतियों का उन्मूलन है। अतएव ग्रामीण विकास भारत में रहने वाले ग्रामीण लोगों के जीवन स्तर में सुधार के अध्ययन का सर्वश्रेष्ठ प्रयास है।

किसी भी ग्रामीण क्षेत्र के विकास में आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्वों का विशेष योगदान रहता है। ये तत्व सीधे तौर पर उत्पादन एवं वितरण को प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं अर्थात् ये उत्पादन के विभिन्न प्रक्रियाओं को सुगम बनाते हैं। जिस क्षेत्र के आर्थिक अवस्थापनात्मक तत्व जितने ही सुदृढ़ होते हैं उस क्षेत्र का विकास उतनी ही तीव्र गति से होता है। इसके अन्तर्गत सड़क विद्युत व्यवस्था, सिंचाई एवं सहकारी समितियों को मुख्य रूप से सम्मिलित किया जा सकता है। सड़के जिस प्रकार एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र को जोड़ने का कार्य करती हैं, उसी प्रकार विद्युत वितरण उस क्षेत्र के विकास हेतु लगाये गये लघु एवं दीर्घ उद्यम को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

किसी भी राष्ट्र के सामाजिक एवं आर्थिक प्रोन्नति के लिए विद्युत एक आवश्यक तत्व है क्योंकि इसके बिना उद्योगों एवं आधारभूत संरचना का विकास असम्भव है। क्योंकि जितने भी आधारभूत तत्व हैं, उनका निर्माण उद्योगों एवं कल–कारखानों में किया जाता है, वे कल कारखाने एवं उद्योग विद्युत द्वारा संचालित होते हैं तथा यातायात के साधन, शिक्षण सहायक सामग्री, कृषि एवं यंत्र आदि का निर्माण कार्य विद्युत के ही माध्यम से किया जाता है। विद्युत के बिना आवास की कल्पना नहीं की जा सकती है, क्योंकि आवास के निर्माण की सहायक सामग्री का निर्माण विद्युत पर ही आधारित है। वर्तमान में मानव जीवन पूर्णतया विद्युत व्यवस्था पर एकदम निर्भर ही हो गया है, क्योंकि रसोई से लेकर, अफीस, स्कूल एवं अन्य सभी जगहों पर इसके बिना कार्य निष्पादन बहुत ही दुष्कर है। वर्तमान समय में विद्युत मानव समाज का आधार सा बन गया है। विद्युत के बिना आधुनिक समाज में मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद सुलतानपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में अवस्थित है। मध्यम गंगा मैदान मैदान में स्थित गोमती नदी द्वारा विभाजित यह जनपद फैजाबाद मण्डल के दक्षिणी भाग में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 25059' उत्तर से 26035' उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 81042' पूर्व से 82041' पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य पाया जाता है।

तालिका सं0–1
सुलतानपुर जनपदः विद्युतीकरण ग्राम (2017–18)

क्र0सं0	विकासखण्ड	विद्युतीकरण ग्राम की संख्या	विद्युतीकरण ग्रामों का कुल आबादी ग्रामों से प्रतिशत
1	वाल्दीराय	98	85%
2	धनपतगंज	118	90%
3	कुरेमार	161	100%
4	जयसिंहपुर	174	99%

ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

5	कुरवर	99	85%
6	दूबेपुर	144	100%
7	मोतिगरपुर	145	100%
8	दोस्तपुर	117	91%
9	अखण्डनगर	106	88%
10	लम्भुआ	182	99%
11	पी0पी0 कमैचा	121	92%
12	कादीपुर	92	84%
13	मोतिगरपुर	79	80%
14	करौंदी कला	72	82%

स्रोतः जनपद सांख्यिकीय पत्रिका–2013 के आधार पर परिगणित

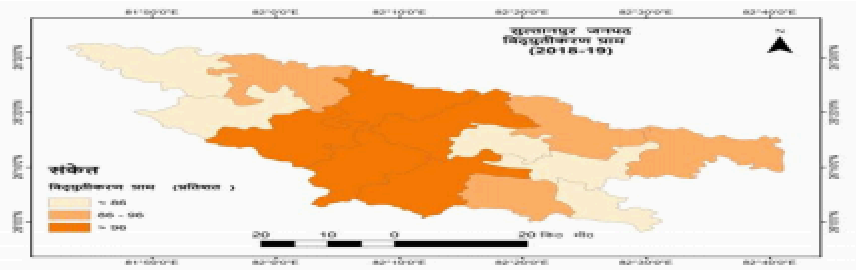

मानचित्र संख्या–1

जनपद में वर्ष 2015–16 से 2017–18 के मध्य विद्युतीकरण ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत में भारी वृद्धि दर्ज की गयी वर्ष 2015–16 से वर्ष 2017–18 के मध्य विद्युतीकरण ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से प्रतिशत 90.17 प्रतिशत रहा है।

तालिका सं0–2

सुलतानपुर जनपदः दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (2018–19)

क्र0सं0	विकासखण्ड	लक्ष्य ग्राम संख्या	पूर्ति ग्राम संख्या	विद्युतीकरण ग्रामों का सफलता प्रतिशत
1	बल्दीराय	60	52	86.66
2	धनपतगंज	89	35	39.32
3	कूरेभार	77	59	76.62
4	जयसिंहपुर	57	48	84.21
5	कुरवर	85	85	100.00
6	दूबेपुर	16	12	75.00
7	मोतिगरपुर	19	15	78.94
8	दोस्तपुर	26	21	80.76
9	अखण्डनगर	56	49	87.50
10	लम्भुआ	71	55	77.46
11	पी0पी0 कमैचा	62	40	64.51
12	कादीपुर	60	52	86.66
13	मोतिगरपुर	18	15	83.33
14	करौंदी कला	27	21	77.77
	जनपद	723	579	80.08

स्रोतः दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति की अधिकारिक वेबसाइट द्वारा

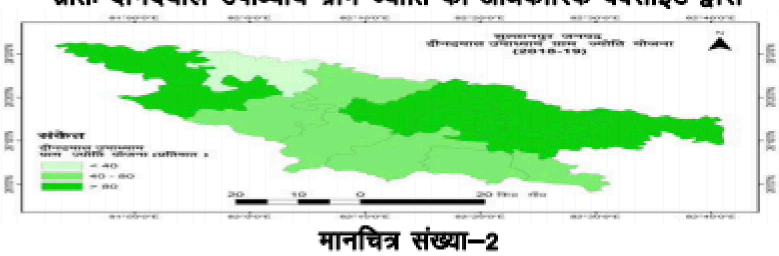

मानचित्र संख्या–2

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

उपरोक्त तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि जनपद में कुल विद्युतीकरण ग्रामों की संख्या 1708 है तथा जनपद में विद्युतीकृत ग्रामों का कुल आबाद ग्रामों से 90.17 प्रतिशत है। दूबेपुर, कुरेमार तथा भादैया विकासखण्डों में शत प्रतिशत विद्युतीकरण हुआ है।

सुलतानपुर जनपद में जिन विकासखण्डों में विद्युतीकरण का प्रतिशत अधिक है उन विकासखण्डों में विकास का स्तर उच्च है। बिजली की उपलब्धता वाले क्षेत्रों में ग्रामीण को ट्यूबबेल, पंखा, टी0वी0, रेफ्रिजरेटर आदि चलाने की सुविधा आसानी से प्राप्त हो जाती है। विद्युत को बढ़ावा देने के लिए जनपद में ग्रामीण विकास योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया है। जैसे– दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना तथा राजीव गाँधी ग्राम विद्युत योजना आदि। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना के अन्तर्गत जनपद का सबसे अधिक विद्युतीकरण कुरवर विकासखण्ड में हुआ है। दुबेपुर विकासखण्ड में पहले से विद्युतीकरण होने के कारण यहाँ ग्रामों का लक्ष्य भी कम ही किया गया था।

गाँवों में विद्युत की उपलब्धता से ग्रामीण जीवन को सरल तथा सुविधापूर्ण बनाने में सहयोग प्रदान करती है। विद्युत के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों कृषि के विकास में भी बहुत सुविधा प्राप्त होती है। इस प्रकार कह सकते हैं कि बिजली सभ्यता का आधार है। इसके बिना सामाजिक जीवन आदिकालीन युग की तरह हो जाएगा, वाणिज्य एवं व्यापार में बाधा पहुँचेगी, जीवन आधुनिक आकर्षण एवं सुविधाओं से वंचित हो जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agrawal, R.D. (1964) : Community Development has it Failed? Journal of Rural Development Kurukshetra, Vol. 21, No. 1, pg. 83.
2. Bose, A.N. (1987) : 'People's Participation for Rural Development - Two Antagonistic Perspective", Indian Journal of Regional Science, Vol. 14. No. 1.
3. Chand , Phul (ed. 1977) : Unemployment Problem in India, National Publishing House, Delhi, pg. 108.
4. कुरूक्षेत्र, नवम्बर 1990, पृ0 10.
5. कुरूक्षेत्र, नवम्बर 1992, पृ0 38.

*****